दिलीप चिंचालकर

एक फ्रेम से क्या हो जाता है चित्र को

चित्रों को फ्रेम में जड़ाने का बड़ा चलन है। यह ठीक है कि काँच, गत्ते और लकड़ी या धातु की फ्रेम के बीच आ जाने से तस्वीरें सुरक्षित हो जाती हैं। देखने वाले को फ्रेम यह भी बताती है कि चित्र कहाँ देखना है। बात ज़रा अटपटी लग सकती है। इसे यूँ समझो ... मेरे पिताजी चित्रकार थे और दीवारों पर सीलन के धब्बों में आकृतियाँ तो क्या पूरे-पूरे चित्र देखते थे। वैसे ही जैसे तुम बादलों और खाते-खाते पकौड़ों में खरगोश, चिड़िया देखते हो। लेकिन हर कोई दीवार के धब्बों में चित्र नहीं देख पाता। तब वे उन धब्बों पर एक फ्रेम लटका देते थे। यह इशारा होता था कि हमें यहाँ देखना है और वे धब्बे चित्र में बदल जाते। यह है फ्रेम का कमाल।

जब तुम कक्षा में या किसी प्रतियोगिता में चकमक के पेज के

बड़ी शीट पर सलीके के साथ खड़ा परिवार

चौथाई हिस्से के बराबर कागज़ पर चित्र बनाते हो तो वह भी फ्रेम में ही होता है। यहाँ फ्रेम अलग से दिखता नहीं फिर भी देखने वालों को पता होता है कि चित्र इतनी ही जगह में है। मान लो कि तुमको एक बड़ी ड्राइंग शीट देकर कहा जाए कि इसमें सिर्फ अपनी कॉपी के आकार की जगह में ही चित्र बनाओ। तुम बना दोगे पर बना चुकने के बाद तुमको और देखने वालों को लगेगा कि काफी जगह खाली छोड़ दी है। यानी चित्र ठीक से कम्पोज़ नहीं हुआ है। तो फ्रेम का काम चित्र को कम्पोज़ करना भी है।

एक अच्छा चित्रकार या फोटोग्राफर चित्र में अच्छे कम्पोज़िशन का ध्यान रखते हैं। कम्पोज़िशन यानी चित्र में जो भी चीज़ें हैं उनकी व्यवस्थित और मन को भाने वाली जमावट। इससे यह ना सोच लेना कि इन चीज़ों को अलमारी में पुस्तकों की तरह करीने से जमा दो तो अच्छा कम्पोज़िशन बन जाएगा। वैसे स्टिल लाइफ में दूसरा होता ही क्या है? बाज़ार से फल-सब्ज़ियाँ लाने बाद उन्हें यूँ ही पटक दो तो फैलारा है। जमाकर रखो तो खूबसूरत नज़ारा है। जितने अलग-अलग ढंग से जमावट करोगे चित्रों में नयापन बढ़ेगा। जमावट जितनी नई होगी चित्र उतना ही अनोखा लगेगा।

स्टिल लाइफ का खूबसूरत नज़ारा

अच्छी जमावट में एक आकार खड़ा तो एक आड़ा होता है। एक गोल तो दूसरा त्रिकोण होता है। सभी चौकोन हों तो सब एक-सरीखे कपड़े पहने हुए लगेंगे। कुछ व्यवस्थित हों, कुछ शरारती हों तो अच्छा लगेगा। अगर सभी फ्रेम के अन्दर ठसाठस भरे हों तो अच्छा नहीं लगेगा। कुछ खुलापन भी ज़रूरी है। मान लो कि एक परिवार का चित्र बनाना है। इन सभी को एक कतार में खड़ाकर दो तो कैसा लगेगा? जैसे शादी में दूल्हे-दुल्हन के साथ खिंचवाई तस्वीर। सब एक जैसी। अगर सब अपने स्वभाव के अनुसार खड़ें हों तो क्या यह कम्पोज़ीशन मज़ेदार नहीं लगेगा?

मम्मी- पापा और आपका कंपोजिशन